रामायण की उपजीव्यता → उपजीव्यता को परिभाषित करते हुए आचार्य बलदेव उपाध्याय का कहना है – "प्रत्येक साहित्य में प्रतिभाशाली कवियों की लेखनी से प्रसूत कतिपय ऐसे मर्मस्पर्शी काव्य हुआ करते हैं जिनसे स्फूर्ति और प्रेरणा लेकर अवान्तर कालीन कविगण अपने काव्यों को सजाया करते हैं। ऐसे काव्यों को हम व्यापक प्रभाव ~~सम्प~~ सम्पन्न होने के हेतु 'उपजीव्य काव्य' के नाम से पुकारते हैं।"

इन्हीं उपजीव्य काव्यों से कविगण अपना मार्गदर्शन करते हैं और काव्य प्रणयन करते हैं। इन उपजीव्य काव्यों में मुख्य हैं– रामायण, महाभारत और श्रीमद्भागवत। इनमें रामायण का स्थान अन्यतम है। यह सकलोपजीव्य है।

बड़े बड़े अन्वेषकों का मत है कि रामकथा को लेकर जितने ग्रन्थ बने, उतने और किसी कथानक को लेकर नहीं बने। अद्भुतरामायण, भुशुण्डि रामायण, योगवाशिष्ठ, अध्यात्म रामायण, अभिनन्दकी रामायण, बाल रामायण आदि अनेकों तो रामायणें हैं। फिर अनर्घराघव, प्रसन्नराघव, उन्मत्तराघव, उत्तररामचरित, महावीरचरित, रघुवंश, रामायण चम्पू आदि दृश्य एवं श्रव्य काव्य बन गए।

किसी विदेशी आलोचक ने एक स्थान पर लिखा है भारतीय कवियों को राम के अतिरिक्त कोई नायक ही नहीं मिलता। किन्तु उसे यह नहीं मालूम था कि भारतीय कवियों ने इसका उत्तर पहले ही दे दिया था-

"स्वसूक्तीनां पात्रं रघुतिलकमेकं कलयतां
कवीनां को दोषः स तु गुणगणानामवगुणः।
~~यदे~~ यदेतैर्निःशेषैरपरगुणलुब्धैरिव जग-
त्यसावेकश्चक्रे सततसुखसंवासवसतिः॥"

अर्थात् अपनी सूक्तियों का विषय एकमात्र कोसल-राजकुमार

Scanned with CamScanner

को ही बनानेवाले बेचारे कवियों का क्या दोष है; दोष तो उन गुणगणों का ही है, जिन्होंने एक स्थान पर परस्पर मिलने के लोभ से केवल श्रीरामचन्द्रजी को ही अपना सुख निवास बना डाला।

तात्पर्य यह कि कथानक सजाने के लिए नायक में जितने गुण चाहिए, वे सब एक ही जगह श्रीरामचन्द्र के अतिरिक्त और कहाँ मिलते हैं, जो कविगण उन्हें छोड़कर दूसरी तरफ दौड़ें। श्रीरामचन्द्र के गुणों का ही यह प्रभाव है कि गोस्वामी तुलसीदास जी ने लोकभाषा में रामायण बनाकर उसे घर-घर में पहुँचा दिया।

वस्तुतः इस आदिकाव्य पर अनादिकाल से प्राच्यभाषातत्त्वविद्, काव्यमर्मज्ञ, मनोविज्ञानशास्त्री, दार्शनिक, वैज्ञानिक, कला-विशारद, अध्यात्म तत्त्ववेत्ता और योगी तक मुग्ध रहे हैं और आधुनिक कर्मयोगी संसार की रीझ और गुणग्राहकता भी इसके दिव्यगुणों के कारण उत्तरोत्तर फल-फूल रही है। निःसन्देह काव्यसंसार में यही एक ऐसा ग्रन्थ है, जो मानवहृदय में सौन्दर्यपूर्ण शैली से सत्यप्रेम उत्पन्न करने की शक्ति रखता है। अतः रामायणचम्पू में कहा गया है-

"मधुमयभणितीनां मार्गदर्शी महर्षिः।"

रामायण के आधार पर महाभारतकाल में नाटक खेले जाते थे। इसका उल्लेख हरिवंशपुराण में प्राप्त होता है-

"रामायणं महाकाव्यमुद्दिश्यनाटकं कृतम्।
जन्म विष्णोरमेयस्य राक्षसेन्द्रवधेप्सया॥"
(2/93/6)

के पश्चात् सबको रामायण के अनुशीलन से यह स्वीकार करना ही होगा कि यह प्रायः काव्यों के प्रायः सभी कोटियों के लिए और उनके सभी उपादानों के लिए रामायण अधिकतम उपजीव्य माना गया है। काव्य के उपादान- वस्तु विन्यास, चरित्र-चित्रण, प्रकृति-वर्णन, शब्द, अर्थ, लक्षणा, व्यञ्जना, रस,

Scanned with CamScanner

गुण, रीति, अलंकार और छन्द आदि का सुकृत रूप इस ग्रन्थ में निखरा है।

वाल्मीकि रामायण पर आधारित रामायण, काव्य, नाटक एवं चम्पू

अध्यात्मरामायण → अध्यात्मरामायण एक आख्यान के रूप में ब्रह्माण्डपुराण के उत्तरखण्ड के अन्तर्गत माना जाता है। अतः इसके रचयिता महामुनि वेदव्यास माने जाते हैं। अध्यात्मरामायण में अनेक स्थलों पर राम हमें अतिमानुष कर्म करते हुए दिखलाई देते हैं। कथानक की घटनाओं को लेकर वाल्मीकि और अध्यात्मरामायण में भिन्नता है। रामचरितमानस और अध्यात्मरामायण के घटनाक्रम में कुछ परिवर्तन के साथ अत्यन्त साम्य दिखाई देता है। अध्यात्मरामायण की समस्त कथा पार्वती-महादेव के संवाद रूप में वर्णित की गई है। इसमें श्रीराम को अनन्तकोटि-ब्रह्माण्डनायक विष्णु स्वरूप बताया गया है। समग्र ग्रन्थ में वेदान्त सम्मत तथ्यों की उपलब्धि होती है।

आनन्दरामायण → इस रामायण में नौ काण्ड है। अन्य रामायणों में प्रायः भगवान् श्रीराम के आविर्भाव से उनके राज्याधिरोहण तक की लीलाएं उपलब्ध होती हैं, किन्तु इस ग्रन्थ में इस पूरी कथा को सारकाण्ड नामक एक काण्ड में समाहित कर अवशिष्ट काण्डों में श्रीराम की अन्यान्य लीलाओं का बड़े ही सुन्दर ढंग से प्रतिपादन किया गया है। अन्य काण्ड हैं- यात्राकाण्ड, यागकाण्ड, विलासकाण्ड, जन्मकाण्ड, विवाहकाण्ड, राज्यकाण्ड, मनोहरकाण्ड तथा पूर्णकाण्ड। इस रामायण में राम के ब्रह्मरूप के प्रतिपादन के साथ उनकी उपासना विधि के महत्व तथा प्रकार पर विशेष आग्रह है। श्लोकों की संख्या 12,252 है।

अद्भुतरामायण → यह न केवल अपने ~~नाम~~ नाम से वरन् कथा प्रसङ्गों एवं वर्णनशैली आदि दृष्टियों से भी अद्भुत है। इस रामायण में 27 सर्ग और 1400 श्लोक

Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

Scanned with CamScanner

हैं। इसकी कथा महर्षि वाल्मीकि और भरद्वाज के संवाद के रूप में निबद्ध है। यह रामायण देवी जानकी को सर्वव्यापी बतला है।

<u>योगवाशिष्ठ</u> → वाल्मीकि रामायण से चार हजार अधिक श्लोक होने के कारण इसे ~~महारामायण~~ महारामायण भी कहा जाता है। इसके अन्य नाम हैं- आर्षरामायण, वाशिष्ठरामायण, ज्ञानवासिष्ठ और वाशिष्ठ हैं। यह ग्रन्थ 6 प्रकरणों में विभक्त है। योगवासिष्ठ में परमार्थिक दृष्टि से सभी तत्त्वों को ~~अनन्तानन्त~~ अनन्तानन्त चैतन्य एकरसात्मा-स्वरूप पर प्रतिष्ठित माना गया है। यह मुख्य रूप से तात्त्विक मनन-प्रधान ग्रन्थ है। ~~इसे~~ इसमें राम को परात्पर परमात्मा स्वीकार किया गया है। ~~इसमें से~~

<u>कृत्तिवासरामायण</u> → ~~[illegible]~~ कृत्तिवास ने पूर्वभारत में श्रीराम की मनोरम लीलाओं का प्रचार किया था। इनका जन्मकाल 15 वीं सदी माना जाता है। इन्होंने कृत्तिवासरामायण की रचना की। ये श्रीहर्ष के वंशज माने जाते हैं।

<u>विलंकारामायण</u> → उड़िया भाषा के आदिकवि शारलादासकृत विलंकारामायण अपने आपमें एक विलक्षणकृति है। इसका रचनाकाल पन्द्रहवीं शताब्दी का है। इसमें बताया गया है कि रामायण सामवेद से उत्पन्न हुआ है। इसमें भगवान् राम की अपेक्षा भगवती सीता की पराक्रमलीला का विशेष वर्णन हुआ है।

<u>मन्त्ररामायण</u> → महाभारत के विश्रुत टीकाकार नीलकण्ठ (17 शती) ने ऋग्वेद के मंत्रों का संग्रह कर अपनी नई टीका में उनका रामपरक तात्पर्य प्रदर्शित किया है।

अन्य काव्यों का लेखकों के नामोल्लेखपूर्वक उल्लेख किया जा रहा है जिन्होंने रामायण को उपजीव्य काव्य के रूप में ~~[illegible]~~ ग्रहण किया है।

Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

Scanned with CamScanner

ग्रन्थकार	रचना
अभिनन्द	रामचरितम्
अनन्तभट्ट	रामकथा
अद्वैतकवि	रामलिंगामृतम्
कृष्णमोहन	रामलीलामृतम्
कृष्णचन्द्र	चन्द्रदूतम्
कुमारदास	जानकीहरणम्
कृष्णेन्द्र	आर्या रामायण
कालिदास	रघुवंशम्
क्षेमेन्द्र	दशावतारचरितम् एवं रामायणमंजरी
क्षीरस्वामी	अभिनवराघव
गंगाधर	संकटनाशनम्
चक्रकवि	जानकीपरिणयम्
चिदम्बर	~~राघव~~ राघवपाण्डवयादवीयम्
जयदेव	प्रसन्नराघवम्
दिङ्नाग	कुन्दमाला
धनञ्जय	राघवपाण्डवीयम्
भोज	चम्पू रामायणम्
भट्टिकवि	~~रामा~~ रावणवधम्
भास	प्रतिमानाटकम् एवं अभिषेकनाटकम्
भवभूति	उत्तररामचरितम् एवं महावीरचरितम्
भास्करभट्ट	उन्मत्तराघवम्
मल्लाचार्य शाकल्य	उदारराघवम्
माधवभट्ट	राघवपाण्डवीयम्
मुरारि	अनर्घराघवम्
मधुसूदन	हनुमन्नाटकम्
मुद्गलभट्ट	रामार्याशतकम्
प्रवरसेन	सेतुबन्धनम्
प्रभाकर	सीताराघवम्

Scanned with CamScanner

यशोवर्मा	रामाभ्युदयम्
रुद्रवाचस्पति	भ्रमरदूतम्
राजशेखर	बालरामायण
वेंकटाचार्य	कोकिलसंदेशम्
वासुदेव	रामकथा
वेंकटेश	चित्रबन्धरामायणम्
विश्वनाथ सिंह	संगीतरघुनन्दनम्
विश्वनाथ	रामविलासम्
वेंकटाध्वरि	यादवराघवीयम्
सोमेश्वर	रामशतकम्
सूर्यदेव	रामकृष्णविलोम
सुभट	दूतांगदम्
सोमदेव	कथासरित्सागर
हरिदत्तसूरि	राघवनैषधीयम्
हरिशंकर	गीतराघवम्
हरिनाथ	रामविलासम्

वस्तुतः इन नामों का उल्लेख तो झांकी मात्र है। नामों की शृंखला इतनी लम्बी है कि सबकी गणना सम्भव नहीं है। यह उक्ति अक्षरशः सत्य है-

"यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।
तावत् रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति॥"

अर्थात् जबतक धरती पर नदियाँ और पहाड़ रहेंगे तबतक इस लोक में रामकथा का प्रचार होता रहेगा।

Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

Scanned with CamScanner